सन्त शिरोमणी गुरू रविदास विश्व महापीठ के तत्वावधान में दिनांक 09.01.2019 को श्रीकृष्ण स्मारक पटना में आयोजित अभिनन्दन समारोह में हरियाणा के राज्यपाल श्री सत्यदेव नारायण आर्य द्वारा दिए जाने वाले भाषण का प्रारूपः–

सर्वप्रथम मैं सन्त शिरोमणी भक्त गुरू रविदास जी के चरणों पर श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ, गुरू रविदास विश्व महापीठ एवं टीम को नमन करता हूँ। मैं विश्व महापीठ के सौजन्य से आयोजित अभिनन्दन समारोह में पहुंचकर अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ।

आदरणीय श्री दुश्यन्त गौतम जी अर्न्तराष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गुरू रविदास विश्व महापीठ, माननीय श्री नित्यानंद जी, अध्यक्ष, श्री शिवेश कुमार जी, अध्यक्ष, संत शिरोमणी गुरू रविदास विश्व महापीठ, श्री गुरू रविदास विश्व महापीठ और माननीय अतिथिगण व साथियों, आप सबका कोटि कोटि धन्यवाद। इसके साथ–साथ मैं आप सबको बधाई देता हूँ कि आप लोग महापीठ के माध्यम से श्री गुरू रविदास जी

की शिक्षाओं व उपदेशों को जन–जन तक पहुॅचाने का कार्य कर रहे है और प्रचारित कर रहे हैं। इसके लिये मैं आप सभी का आभार प्रकट करता हूॅ।

सन्त गुरू रविदास जी ऐसे समय में अवतरित हुये जब गरीबों पर अत्याचार बढ रहे थे। गुरू रविदास जी का जन्म काशी में 1398 ई0 में हुआ। पिताजी का नाम संतोख दास तथा माता का नाम कालसी जी था। गुरू रविदास जी बचपन से ही सन्तों के साथ रहते थे। वैसे तो हमारे देश में सदियों से अनेक महान सन्तों ने जन्म लेकर भारत–भूमि को धन्य किया है, जिसके कारण ही भारत को विश्वगुरू कहा जाता है। जब–जब हमारे देश में ऊॅच–नीच भेदभाव, जाति–पाति, धर्मभेद हुआ है, तब–तब देश में अनेक महापुरूषों ने इस धरती पर जन्म लेकर समाज में फैली कुरितियों/बुराईयों, को दूर करने के लिए भूली भटकी मानवता को जीवन का सच्चा रास्ता दिखाया है। ऐसे महापुरूषों में संत शिरोमणि गुरू रविदास जी का नाम बड़े आदर से लिया जाता है।

संत रविदास जी किसी एक जाति या सम्प्रदाय के गुरू नहीं थे, वे पूरी मानव जाति के पथ–प्रदर्शक थे। उनकी

शिक्षॉएं पूरी मानवता के लिए है, जो आज भी हमारा प्रकाश स्तम्भ की तरह मार्गदर्शन कर रही है।

जैसा कि पूरा विश्व जानता है 14वीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के समय उनका चिंतन–दर्शन किसी जाति व व्यक्ति तक ही सीमित नहीं था, बल्कि संपूर्ण विश्व की चिंता दर्शाता है। वे कहते थे कि

ऐसा चाहूँ राज मैं, जहां मिले सबन को अन्न।
छोट बड़ो सब सम बसै, रैदास रहे प्रसन्न।

रविदास जी ऐसे समाज की शासन व्यवस्था चाहते है जहां सबको भोजन मिले, कोई भी भूखा न सोये और छोटे बड़े की कोई भावना न रहे। सभी मनुष्य समान हो। इससे साफ है कि जिस खाद्य सुरक्षा अधिनियम की बात आज हो रही है, उसे गुरू रविदास जी ने 14वीं शताब्दी में ही पेश कर दिया था। ऐसे सामाजिक परिपेक्ष समाज धर्मिता एवं मानवीय प्रेम की वकालत करने वाले श्री गुरू रविदास जी आज अपने चिंतन दर्शन और अपनी शिक्षाओं के कारण पूरे विश्व में प्रचारित है। श्री गुरू रविदास जी के साथ ही गुरू नानक जी, महात्मा बुद्ध जी, कबीरदास जी और बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी का चिंतन दर्शन समाज में एक नई

सांस्कृतिक परिवर्तन की लहर प्रदर्शित कर रहा है। इस पर हम सभी गर्व महसूस करते हैं। देश के सम्मानित जन–जन के नेता प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सामाजिक समरसता की परंपरा को तेजी से आगे बढ़ाया है। उन्होने गुरू रविदास जी द्वारा दिए गए **"सब समान बसें"** विचार को आगे बढ़ाते हुए **सबका साथ–सबका विकास** का नारा दिया और आज इसी नारे पर काम कर रहे है।

रविदास जी कहते हैं कि सभी लोग जातपात में उलझे हुए हैं और यह रोग मनुष्यता को खा रहा है। वे इस बात को मानते हैं कि मनुष्य जन्म से छोटा नहीं होता बल्कि अपने कर्मों से छोटा या बड़ा होता है। श्री गुरू रविदास जी जाति व्यवस्था के घोर विरोधी थे उन्होने कहा भी है कि–

जाति–जाति मे जाति है, जो केतन के पात।
रैदास मनुष ना जुड़ सके जब तक जाति न जात।।

उनके बताये हुये रास्ते को अपनाकर ही हम सामाजिक समानता के सपने को साकार कर सकते है। देश की एकता के लिए भेदभाव रहित समाज का जो रास्ता उन्होनें दिखलाया, उसे अपना कर देश के प्रधानमन्त्री माननीय

श्री नरेन्द्र मोदी जी सबका साथ–सबका विकास के मार्ग पर कार्य कर रहे है।

श्री गुरू रविदास जी वैर–विरोध और नफरत तथा सम्प्रदायिकता के तो प्रबल विरोधी थे। उन्होंनें अपनी वाणी में साफ तौर पर यह कहा है कि

राम–रहीम, काशी–काबा, मन्दिर–मस्जिद सब एक है।

हमारे राम तो हमारे शरीर मे ही बसे हुये है और सारा विश्व ही उनके लिये एक परिवार है, इस प्रकार से **वसुधैव कुटूम्बकम्** का सन्देश भी पहली बार उन्होने दिया था।

कोई भी इन्सान उॅचा उठना चाहे तो वह संघर्ष, कड़ी मेहनत, ईमानदारी, समाज सेवा और प्रभु–भक्ति से ही उॅचा उठ सकता है और वह महान् बन सकता है। डा0 भीमराव जी अम्बेडकर संघर्ष की एक जीती जागती तस्वीर हैं। उन्होने स्वंय संघर्ष का मार्ग अपनाकर देश की गरीब जनता के लिये प्रगति व उत्थान का मार्ग प्रसस्त किया।

डा0 अम्बेडकर जी ने भी गरीबों को **तीन सूत्र दिये– शिक्षित बनो, संगठित रहो और संघर्ष करो**।

हम सभी इस मार्ग पर चले तो वह दिन दूर नही जब हमारा समाज प्रथम पक्ति मे खड़ा होगा।

गुरू रविदास जी का सम्पूर्ण जीवन दर्शन सदाचार, सादगी और कर्मयोग का सन्देश देता है। उन्होनें भक्ति मार्ग को अपनाते हुए मानव–मात्र की सेवा के साथ–साथ कर्म पर उसी तरह बल दिया जैसे भगवान श्री कृष्ण ने गीता में कर्म का अमर सन्देश दिया है। उन्होनें सबसे पहले स्वतन्त्रता और एकता का भी शंखनाद किया था। गुरू जी ने स्वतन्त्रता व एकता से जीवन निर्वाह की प्रेरणा देते हुये उन्होनें कहा–

पराधीनता पाप है जान लेहू रे मीत
रविदास पराधीन से कौन करे है प्रीत

अटूट भक्ति एवं विश्वास से सन्त जी ने कहा है–

मन चंगा (सच्चा) तो
कठौती में गंगा

सन्त शिरोमणी श्री गुरू रविदास जी और डा0 भीमराव जी अम्बेडकर के बताये मार्ग पर चलने से ही समाज का उद्धार हो सकता है। हम सब समाज की एकता के लिये कार्य करें और हर जरूरत मंद व्यक्ति की सहायता करें तो तभी गुरू

जी का समभाव का सन्देश सार्थक हो सकता है। श्री गुरू रविदास जी की वाणी आज भी प्रासंगिक है, इसे जीवन मे ढालना जीवन को सफल बनाना है। संत गुरू रविदास जी के विचार, व्यवहार, कर्म एवं भाव से प्रभावित हो कर मीरा जी उनकी शिष्या हो गयी।

सन्त शिरोमणी गुरू रविदास विश्व महापीठ श्री गुरू रविदास जी के सन्देश को जन–जन तक पहुंचाने का महान कार्य कर रही है इसके लिये मैं महापीठ की टीम को साधुवाद व बधाई देता हूँ। विश्व महापीठ के कार्यों से गरीब समाज को एक नया रास्ता मिल रहा है इसके लिये मै संत शिरोमणी गुरू रविदास विश्व महापीठ को नमन करता हूँ। एक बार फिर मै पूरी टीम को जिन्होनें मुझे यहां आमन्त्रित कर सम्मान दिया है, हृद्य से आभार प्रकट करता हूँ तथा सभी को नमस्कार, जय रविदास जी।

जय हिन्द।